



ई- समाचार पत्रिका



प्रति संख्या 4/2023-24

जनवरी-मार्च 2024



वनस्पति संरक्षण सलाहकार की कलम से

वित्तीय वर्ष 2023-24 समाप्त हो चुका है तथा हम नए वित्तीय वर्ष 2024-25 में कदम रख रहे हैं, हमारी उपलब्धियों को प्रतिबिंबित करने, नये लक्ष्य की पहचान करने एवं तय लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु, भविष्य में किये जाने वाले प्रयासों के लिए सटीक कार्य योजना बनाने का यह उपयुक्त क्षण है।

वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान "आम के फल मक्खियों के प्रबंधन के लिए सिस्टम एप्रोच" पर एशिया प्रशांत वनस्पति संरक्षण आयोग (एपीपीपीसी) कार्यशाला जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किए गए। इसके अतिरिक्त आम निर्यात व्यवसाय के प्रोत्साहन के उद्देश्य से निदेशालय द्वारा माह जनवरी, 2024 में मुंबई में एक कार्यशाला तथा मार्च, 2024 में, आम निर्यात के लिए पादप स्वच्छता पहलुओं पर वर्चुअल कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें 500 से अधिक लोगों ने भाग लिया। पिछली तिमाही के दौरान संयुक्त राज्य अमेरिका को अनार के फलों के वाणिज्यिक निर्यात का शुरुआत होना भी निदेशालय की एक विशिष्ट उपलब्धि रही है।

इसके अतिरिक्त निदेशालय ने भारतीय कृषि उत्पाद के निर्यात प्रोत्साहन तथा नए बाजार तक पहुंच प्राप्त करने के लिए विभिन्न देशों के साथ फाइटोसैनिटरी वार्ता में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के साथ ही कृषि उत्पाद के आयात से जुड़े मुद्दों को भी सौहार्दपूर्ण तरीके से हल किया है।

हितधारकों की सुविधा में निरन्तर बेहतरी के लिए निदेशालय द्वारा ऑनलाइन पोर्टल "प्लान्ट क्वारंटाइन मैनेजमेंट सिस्टम-पीक्यूएमएस" में लगातार सुधार किया जा रहा है। इसी कड़ी में हितधारकों के सुगमता के लिए पीक्यूएमएस वेब पोर्टल में एक नया टैब- "आईए-पंजीकरण" जोड़ा गया है और हमें उम्मीद है कि इस समावेशन से "पोस्ट एंट्री क्वारंटाइन" से जुड़े विषयों पर बेहतर निगरानी में मदद मिलेगी।

वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान निदेशालय ने "राष्ट्रीय पेस्ट निगरानी प्रणाली (एनपीएसएस)" के निर्माण एवं बेहतरी के लिए पूरी निष्ठा एवं तत्परता के साथ कार्य किया है। कार्य में निरंतरता एवं सकारात्मक प्रयासों का ही प्रतिफल है कि एनपीएसएस पोर्टल/मोबाइल ऐप अपने फाइनल स्टेज में है तथा शीघ्र ही एआई/एमएल आधारित एनपीएसएस ऑनलाइन प्रणाली प्रभावी पेस्ट निगरानी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के साथ ही कृषक समुदाय एवं नीति निर्धारकों को तात्कालिक समाधान प्रदान करने में सहयोगी बनेगा। नियमित कार्यों जैसे: पेस्टनिगरानी के लिए फील्ड सर्वेक्षण, एफएफएस, मानव संसाधन विकास कार्यक्रम, कपास तथा आम पर एस.एल.टी.पी. जैसे कार्यक्रम के आयोजन के अतिरिक्त, आईपीएम डिवीजन एवं देश भर के सभी फील्ड स्टेशनों ने एआई आधारित पेस्ट निगरानी प्रणाली(एनपीएसएस) के प्रोत्साहन हेतु विभिन्न राज्यों के 276 जिलों के कुल 2760 किसानों को एनपीएसएस स्काउट के तौर पर प्रशिक्षित किया है। पूर्ण विश्वास है कि बहुत जल्द एवं वर्ष 2024-25 के अवधि में ही शेष 480 जिलों के किसानों को विभिन्न फसल एवं सम्बंधित पेस्ट के पहचान के लिए एनपीएसएस उपयोग हेतु प्रशिक्षित कर लिया जाएगा।

निदेशालय, किसानों के हितों की सुरक्षा एवं बाजार में मानक पेस्टिसाइड्स की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहा है। इसी दिशा में इनपुट विनिर्माण इकाइयों / आपूर्ति श्रृंखलाओं के नियमित निरीक्षण तथा ऑडिट के अतिरिक्त, वर्ष 2023-24 के खरीफ तथा रबी सीजन के दौरान पेस्टिसाइड के नमूना आहरण तथा विश्लेषण के लिए दो विशेष अभियान चलाए गए।

बायो-पेस्टिसाइड के गुणवत्ता नियंत्रण में सहायता के लिए अधिकांश आरसीआईपीएमसी ने बायो-पेस्टिसाइड परीक्षण प्रयोगशालाएं स्थापित की हैं। सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एवं संयुक्त रूप से "एकीकृत पेस्टिसाइड प्रबंधन प्रणाली" (आईपीएमएस) विकसित करने के लिए डीपीपीक्यू एंड एस तथा भारतीय उद्योग परिसंघ के बीच वर्ष 2023 -24 के अवधि में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गया।

सभी कर्मचारियों के डेटाबेस को ऑनलाइन उपलब्ध कराने एवं अद्यतन रखने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा "ई-एचआरएमएस प्रणाली" शुरू की गई है। ई-एचआरएमएस 2.0 पोर्टल पर निदेशालय के जी.सी.एस. केंद्र (तकनीकी और गैर-तकनीकी) के 1070 से अधिक कर्मचारी के शामिल होने से प्रशासन के क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि हासिल हुई है। निदेशालय में कार्यरत 90% से अधिक कर्मचारियों को ई-एचआरएमएस 2.0 पोर्टल पर शामिल करने के साथ ही उनके सर्विस प्रोफाइल का सत्यापन पूरा हो चुका है। ई-एचआरएमएस प्रणाली मानव संसाधन प्रबंधन की नियमित गतिविधियां के संचालन में दक्षता बढ़ायेंगी। इसके अतिरिक्त, ईमेल पत्राचार के लिए सरकार की नीति के पूर्णतया अनुपालन के उद्देश्य से निदेशालय के सभी स्टाफ सदस्यों के लिए सरकारी ईमेल खाते बनाने में सुगमता एवं सहयोग के लिए एक निर्दिष्ट "एडमिन कंसोल" बनाया गया है।

माननीय प्रधान मंत्री द्वारा शुरू किए गए "मिशन मोड भर्ती अभियान" के अनुपालन में किये गए प्रयास के परिणामस्वरूप हाल ही में विभिन्न स्तरों पर 250 से अधिक नए अधिकारी/कर्मचारी निदेशालय में शामिल हुए हैं। नए युवाकर्मियों, अपने साथ विविध पृष्ठभूमि, दृष्टिकोण तथा नए अनुभव लेकर आते हैं। वर्तमान पीढ़ी प्रौद्योगिकी के साथ बड़ी हो रही है तथा सामान्यता आज के युवा नयी तकनीक के उपयोग में अत्यधिक कुशल भी हैं।

नए लोग प्रायः अपने काम के प्रति उत्साहित रहने के साथ ही नई चुनौतियों के हल के लिए आत्म प्रेरित होते हैं। वर्तमान परिदृश्य विशिष्ट होने के साथ ही तेजी से परिवर्तनशील भी है। ऐसे में, उम्मीद है कि नयी पीढ़ी निदेशालय के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी और हमारे प्रयासों की बेहतरी में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

नए वित्तीय वर्ष की शुरुआत वसंत के आगमन के साथ होती है - यह समय पेड़-पौधों पर नयी कोंपल फूटने, फूलों के खिलने के साथ ही सर्दियों के दौरान खेतों में किये गए कड़ी मेहनत के फलस्वरूप प्राप्त उपज को सहेजने का भी है। आइए विकास के इस मौसम को अपनाएं और पहले से ज्यादा बड़ी सफलता हासिल करने के लिए पूरे मनोयोग से अपने प्रयास की शुरुआत करें।

वनस्पति संरक्षण से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों तथा अन्य गतिविधियों के सफल क्रियान्वयन हेतु, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों से प्राप्त निरंतर समर्थन, मार्गदर्शन तथा प्रोत्साहन के लिए मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, साथ ही निदेशालय की जिम्मेदारियों को पूरा करने में सहयोगी रहें सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की भी सराहना करता हूँ।

- जे. पी. सिंह

वनस्पति संरक्षण सलाहकार

सूची

- प्रमुख कार्यक्रम
- अंतर्राष्ट्रीय सहभागिता
- गणमान्य अतिथियों का भ्रमण
- प्रशिक्षण एवं कार्यशालाएं
- द्विपक्षीय पादप स्वच्छता वार्ता
- विशिष्ट उपलब्धि एवं समारोह
- भारत का राजपत्र अधिसूचनाएँ
- सफलता गाथा

प्रमुख कार्यक्रम

एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन (सीआईपीएमसी के प्रयास):

- इस अवधि के दौरान 3.64 लाख हेक्टेयर फसल क्षेत्र का सर्वेक्षण किया गया और महत्वपूर्ण नाशीजीवों के प्रबंधन के लिए 02 परामर्शिकाएं जारी की गईं ।
- समाप्त तिमाही के दौरान नाशीजीव प्रबंधन के लिए 0.43 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में 1060.28 मिलियन जैवनियन्त्रण कारक- जारी किए गए।
- 2.71 लाख हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में जैव- नियंत्रण कारकों का सफलतापूर्वक संरक्षण किया गया।
- रबी सीजन में 19 किसान खेत पाठशाला (एफएफएस) आयोजित किए जा रहे हैं जिसमें 665 किसानों को आईपीएम तकनीक के बारे में प्रशिक्षित किया जा रहा है।
- कुल 49 "दो दिवसीय मानव संसाधन विकास कार्यक्रम" आयोजित किए गए जिसमें 2729 कृषि विस्तार अधिकारी, गैर सरकारी संस्था, अग्रणी किसान, निजी उद्यमी को आईपीएम उपायों पर प्रशिक्षित किया गया।
- इसी अवधि के दौरान 05, पांच दिवसीय मानव संसाधन विकास कार्यक्रम आयोजित किए गए जहां राज्य कृषि विभाग के 216 आईओ को आईपीएम उपायों पर प्रशिक्षित किया गया।

वनस्पति संगरोध (केन्द्रों द्वारा किए गए प्रयास):

- ♣ कृषि उत्पादों के निर्यात को सुगम बनाने में सहयोग करते हुए इस दौरान 103.88 लाख मीट्रिक टन कृषि उत्पादों के निर्यात के लिए कुल 1,57,854 पादप स्वच्छता प्रमाणपत्र जारी किये गए।
- ♣ 51.76 लाख मीट्रिक टन आयातित कृषि उत्पादों का निरीक्षण उपरांत कुल 32,703 आयात निगमन मंजूरी जारी की गई।
- ♣ प्रभावी पादप संगरोध निरीक्षण प्रणाली के माध्यम से 213 आयातित कृषि उत्पादों में 225 संगरोध नाशीजीवों का पता लगाकर भारत में प्रवेश को रोकने में सफलता मिली।
- ♣ पादप स्वच्छता मुद्दों पर अन्य देशों के साथ सफलतापूर्वक बातचीत कर भारतीय कृषि उत्पादों के निर्यात के लिए तीन नए बाजार प्राप्त किए।

तिमाही के दौरान एजेंसियों के पंजीकरण/मान्यता प्रमाणपत्र का विवरण

पंजीकृत/मान्यता प्राप्त एजेंसियों के नाम	संख्या
मिथाइल ब्रोमाइड (एमबीआर) धूमन एजेंसी	19
एल्यूमिनियम फॉस्फाइड (एएलपी) धूमन एजेंसी	17
फ़ोर्सर्ड हॉट-एयर ट्रीटमेंट (एफएचएटी)	16
संयुक्त राज्य अमेरिका को चावल निर्यात के लिए चावल मिलें/प्रसंस्करण इकाइयाँ	02
चीन को चावल निर्यात के लिए चावल मिलें/प्रसंस्करण इकाइयाँ	02
मूंगफली के निर्यात के लिए प्रसंस्करण इकाइयाँ	03
संयुक्त राज्य अमेरिका को अनार के फलों के निर्यात के लिए पैक हाउस	04
संयुक्त राज्य अमेरिका को आम के फलों के निर्यात के लिए पैक हाउस	01

प्रशासन:

- 90% कर्मचारी ई-एचआरएमएस 2.0 पोर्टल पर जुड़ चुके हैं।
- निदेशालय के कर्मचारियों के .gov ई-मेल खातों के निर्माण के लिए निर्दिष्ट एडमिन कंसोल बनाया गया है।

नई नियुक्तियां: समाप्त तिमाही के दौरान निदेशालय में कुल 02 नए लोगों ने सहायक पौध संरक्षण अधिकारी एवं वैज्ञानिक सहायक के पद पर योगदान दिया ।

शुभकामनाएं

केंद्रीय कीटनाशक प्रयोगशाला, क्षेत्रीय नाशीजीवनाशक जांच प्रयोगशाला एवं तकनीकी विधायी अनुभाग:

▲ आर.पी.टी.एल. के द्वारा कुल 855 नाशीजीवनाशकों के नमूनों का परीक्षण किया गया इनमें से 70 को निम्न मानक (Misbranded) घोषित किया गया।

▲ सी.आई.एल. ने 587 नाशीजीवनाशकों के नमूनों का परीक्षण किया, जिनमें से 164 निम्न मानक (Misbranded) के पाए गए।

केंद्रीय कीटनाशक बोर्ड एवं पंजीकरण समिति:

पंजीकरण समिति के द्वारा कुल 3369 नाशीजीवनाशकों के लिए पंजीकरण प्रमाण पत्र जारी किया गया जिसमें 34 बायो-पेस्टिसाइड, 310 निर्यात हेतु एवं 3025 रासायनिक नाशीजीवनाशकों के लिए जारी हुए।

टिड्डी चेतावनी संगठन (LWO/LCO/FSIL द्वारा किए गए प्रयास):

● रेगिस्तानी टिड्डी सर्वेक्षण कार्य 28.523 लाख हेक्टेयर में किया गया एवं इसी अवधि के दौरान भारत और पड़ोसी देशों में टिड्डीयों की मौजूदा स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कुल 06 टिड्डी सूचना बुलेटिन प्रकाशित किये गए।

राजभाषा हिंदी:

क्षेत्रीय वनस्पति संगरोध केंद्र, अमृतसर में दिनांक 30/01/2024 को राजभाषा हिंदी की चौथी त्रैमासिक बैठक आयोजित की गई।



संसदीय राजभाषा समिति की बैठक दिनांक: 19.03.2024 को निदेशालय मुख्यालय में आयोजित की गई। इस बैठक में डॉ. जे.पी. सिंह, पीपीए एवं निदेशालय के अन्य अधिकारी उपस्थित रहें।

निदेशालय के राजभाषा अनुभाग द्वारा दिनांक: 17.01.2024 को मुख्यालय में सुलभ अनुवाद के लिए विकसित वेब पोर्टल "कंठस्थ 2.0" पर कर्मचारियों के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम में आयोजित किया गया।



संसदीय राजभाषा समिति की उपसमिति द्वारा दिनांक: 15 एवं 16 जनवरी 2024 को केन्द्रीय एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन केन्द्र, जयपुर के हिंदी कार्यों की द्वितीय राजभाषा समीक्षा की गयी।

योजना और समन्वय इकाई:

- "वनस्पति संरक्षण एवं केंद्रीय कीटनाशक बोर्ड" विषय पर कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय के सलाहकार समिति की अंतर-सत्रीय बैठक 30.01.2024 (मंगलवार) को शाम 6:00 बजे समिति कक्ष 'सी', संसदीय सौध, नई दिल्ली में श्री अर्जुन मुंडा, माननीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री, की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस बैठक में श्री कैलाश चौधरी, माननीय राज्य मंत्री (कृषि और किसान कल्याण), सुश्री शोभा करंदलाजे, माननीय राज्य मंत्री (कृषि एवं किसान कल्याण), श्री मनोज आहूजा, सचिव, डॉ. प्रमोद कुमार मेहरदा, अति. सचिव (पीपी), डॉ. आशीष कुमार श्रीवास्तव, संयुक्त सचिव (पीपी), डॉ. रणजीत सिंह, निदेशक (पीपी) (कृषि एवं किसान कल्याण विभाग), डॉ. जे.पी. सिंह, वनस्पति संरक्षण सलाहकार और डॉ. अर्चना सिन्हा, संयुक्त निदेशक (रसायन) ने बैठक में भाग लिया।
- "विदेशी-आक्रामक कीट प्रजाति एवं उनके प्राकृतिक शत्रुओं के आणविक पहचान के क्षेत्र में हुए नवीनतम प्रगति" विषय पर आईसीएआर-एनबीएआईआर, बेंगलुरु में 18.01.2024 से 07.02.2024 के दौरान आयोजित प्रशिक्षण में निदेशालय से एक अधिकारी सम्मिलित हुए।
- आईसीएआर-एनबीएआईआर, बेंगलुरु में 29.01.2024 से 02.02.2024 के दौरान इसरो के आपदा प्रबंधन सहायता कार्यक्रम (डीएमएसपी) के तहत प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम "भारत के उत्तरी राज्यों में रेगिस्तानी टिड्डी निगरानी एवं आपदा प्रबंधन सहायता में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग" में निदेशालय के चार प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- इसी अवधि के दौरान सूचना का अधिकार के तहत प्राप्त कुल 56 आर.टी.आई. अनुरोध एवं 72 शिकायत/ परिवाद का समाधान किया गया।
- सभी संसदीय प्रश्नों का मसौदा उत्तर निर्धारित समय अवधि के भीतर कृषि एवं कल्याण विभाग को प्रस्तुत किया गया।

सचिवालय प्रशिक्षण एवं प्रबंधन संस्थान (आईएसटीएम) द्वारा आयोजित निम्नलिखित शिक्षण/ कार्यशाला में निदेशालय की भागेदारी रहीं :

क्र. सं.	शिक्षण/ कार्यशाला	अवधि	प्रतिभागियों की संख्या
1	"व्यय वित्त समिति/स्थायी वित्त समिति (ईएफसी/एसएफसी-03) की तैयारी"	14 से 16 फरवरी, 2024	01
2	"अंतर वैयक्तिक प्रभावशीलता (आईपीई-07)"	26 एवं 27 फरवरी, 2024	07
3	"सूचना का अधिकार - जन सूचना अधिकारी (आरटीआई-पीआईओ-36)"	04 से 06 मार्च, 2024	20
4	"सरकारी ई-मार्केटप्लेस (GeM-04)"	11 एवं 12 मार्च, 2024	34

अंतर्राष्ट्रीय सहभागिता

"भारत और नेपाल के बीच अंतर-शासकीय उप समिति (आईजीएससी) की बैठक"



डॉ. जे.पी. सिंह, पादप संरक्षण सलाहकार ने 12 और 13 जनवरी 2024 के दौरान काठमांडू, नेपाल में आयोजित "भारत और नेपाल के बीच अंतर-सरकारी उप समिति (आईजीएससी) बैठक" में भाग लिया। बैठक के दौरान भारत और नेपाल के बीच व्यापार पारगमन और सहयोग पर चर्चा हुई।

विशिष्ट उपलब्धि एवं समारोह

पी.ए.यू., लुधियाना का दौरा



डॉ. जे.पी. सिंह, वनस्पति संरक्षण सलाहकार द्वारा दिनांक 07 फरवरी, 2024 को पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना में "कीटनाशक पंजीकरण और जैव-सुरक्षा के लिए नियामक तंत्र" विषय पर अतिथि व्याख्यान देने के उपलक्ष्य में "सम्मान पुरस्कार प्रदान किया गया।

मुख्य आयुक्त, सीमा शुल्क के सम्मेलन में भागीदारी

15-16 फरवरी, 2024 के दौरान भोपाल में आयोजित सीमा शुल्क मुख्य आयुक्तों के सम्मेलन में डॉ. जे.पी. सिंह, पीपीए ने जैव-सुरक्षा, पादप संगरोध और पेस्टिसाइड के आयात से संबंधित मुद्दों पर पैनल चर्चा में भाग लिया।



"2047 तक खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए फसल संरक्षण उद्योग की तैयारी" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में भागीदारी

26 फरवरी, 2024 को पीएचडी हाउस, नई दिल्ली में पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (पीएचडीसीसीआई) द्वारा "2047 तक खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए फसल संरक्षण उद्योग की तैयारी" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में डॉ. जे.पी. सिंह, पीपीए ने भाग लिया।





बायो-पेस्टिसाइड परीक्षण प्रयोगशाला का उद्घाटन

क्षेत्रीय केंद्रीय एकीकृत नशीजीव प्रबंधन केंद्र, लखनऊ में “बायो-पेस्टिसाइड परीक्षण प्रयोगशाला” का उद्घाटन दिनांक: 03 जनवरी, 2024 को डॉ. जे.पी. सिंह वनस्पति संरक्षण सलाहकार द्वारा किया गया।

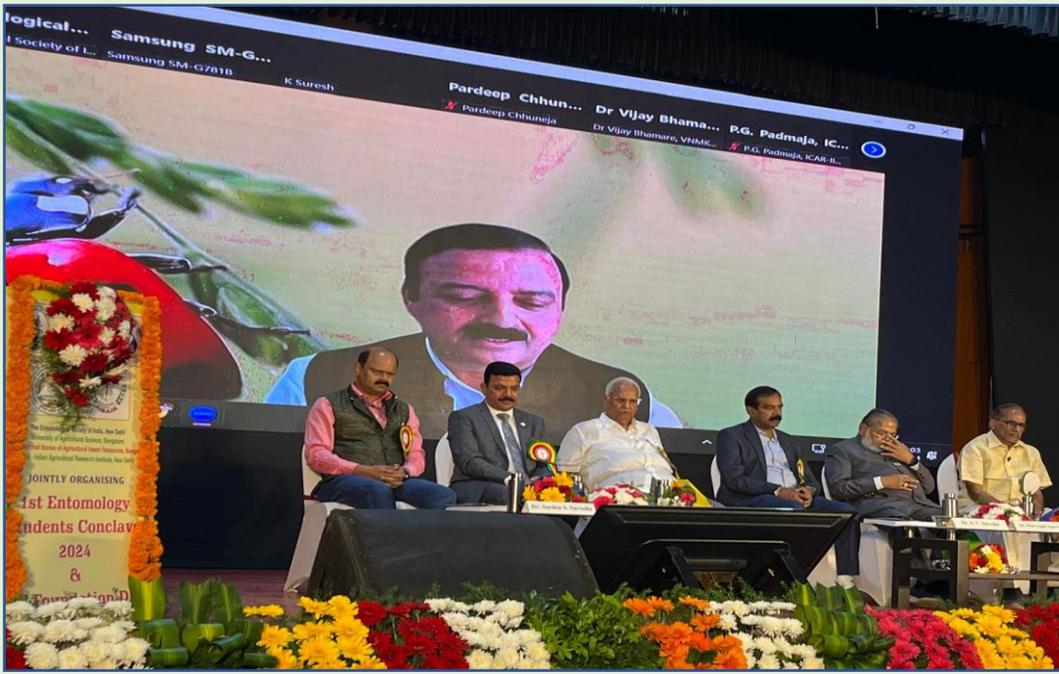
20th
JANUARY

75वां गणतंत्र दिवस समारोह



26 जनवरी 2024 को निदेशालय में 75वां गणतंत्र दिवस पुरे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। डॉ. जे.पी. सिंह, पीपीए ने तिरंगा फहराया एवं हमारे संविधान निर्माताओं के योगदान पर चर्चा की । इस कार्यक्रम में निदेशालय के अधिकारी/कर्मचारी काफी संख्या में शामिल हुये।





कीट विज्ञान छात्र कॉन्क्लेव 2024 में भागीदारी

डॉ. जे.पी. सिंह, पीपीए ने 24-25 फरवरी 2024 के दौरान जी.के.वी.के., बेंगलुरु में आयोजित एंटोमोलॉजी स्टूडेंट्स कॉन्क्लेव 2024 में भाग लिया और सभा को संबोधित किया।



इंडियन सोसाइटी ऑफ माइकोलॉजी एंड प्लांट पैथोलॉजी (आईएसएमपीपी) की तीसरी एशियाई कांग्रेस में भागीदारी

इंडियन सोसाइटी ऑफ माइकोलॉजी एंड प्लांट पैथोलॉजी, आरसीए, एमपीयूएटी, उदयपुर एवं दंतीवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय सरदारकृषिनिगर, गुजरात, द्वारा 7-10 फरवरी, 2024 के अवधि में "बेहतर कल के लिए प्लांट पैथोलॉजी: प्लांट एंड सॉइल हेल्थ मैनेजमेंट" विषय पर सी.पी. कृषि महाविद्यालय सरदारकृषिनिगर दांतीवाड़ा (गुजरात) में आयोजित तीसरी एशियाई कांग्रेस में डॉ. के.एल. गुर्जर, जेडी (पीपी) ने भाग लिया एवं सभा को संबोधित किया।



डॉ. के.एल. गुर्जर, जेडी (पीपी) ने भाग लिया एवं सभा को संबोधित किया।



आईसीएआर-एनबीएआईआर उद्योग-इंटरफ़ेस मीट-2024 में भागीदारी

आईसीएआर-एनबीएआईआर, हेब्बल परिसर में ने 20 मार्च, 2024 को आयोजित आईसीएआर-एनबीएआईआर उद्योग-इंटरफ़ेस मीट-2024 में डॉ. के.एल. गुर्जर, जेडी (पीपी) भाग लिया एवं नियामक अनुपालन उपायों पर सभा को संबोधित किया।

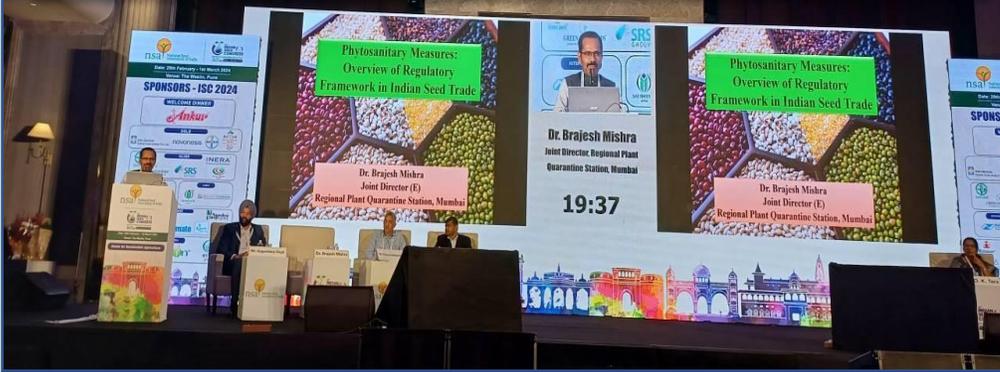


संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए अनार फलों का निर्यात का शुभारम्भ

संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए अनार के फलों की पहली वाणिज्यिक खेप के निर्यात का शुभारम्भ दिनांक: 28 फ़रवरी, 2024 को श्री राजेश अग्रवाल, अतिरिक्त सचिव, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा हरी झंडी दिखाकर किया गया।



भारतीय बीज कांग्रेस 2024 में भागीदारी



29 फरवरी से 1 मार्च 2024 तक पुणे, महाराष्ट्र में नेशनल सीड एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित "भारतीय बीज कांग्रेस 2024" में डॉ. ब्रजेश मिश्रा, सं.निदेशक (की.वि.), आरपीक्यूएस, मुंबई ने भाग लिया एवं 'पादप स्वच्छता एवं भारतीय बीज व्यापार में नियामक ढांचे का अवलोकन' विषय पर व्याख्यान दिया।

क्या आप जानते हैं ?

दो फफूंदी जिसने फ्रांसीसी वाइन उद्योग को तहस-नहस कर दिया



पाउडरी मिल्ड्यू (1851)

पाउडरी मिल्ड्यू पहली बार 1834 में उत्तरी अमेरिका में रिपोर्टेड हुई थी। 1845 में उत्तरी अमेरिका से पौध-सामग्री के आयात के बाद फ्रांस में इसकी सूचना मिली।



1851 तक यह बीमारी यूरोप के हर अंगूर उत्पादक देश में पहुंच गई तथा इस रोग की वजह से वर्ष 1854 में फ्रांस में सबसे ज्यादा नुकसान हुआ।

पाउडरी मिल्ड्यू की वजह से 1854 तक फ्रेंच वाइन का उत्पादन 80% कम हो गया एवं वाइन की कीमतें दोगुनी हो गईं।

डाउनी मिल्ड्यू (1878)

फाइलोकसेरा एफिड को नियंत्रित करने के लिए वर्ष 1878 में अंगूर के प्रतिरोधी प्रजाति के रूटस्टॉक्स को उत्तरी अमेरिका से यूरोप में आयात किया गया था एवं इसी के साथ ही डाउनी मिल्ड्यू रोग भी यूरोप पहुंच गया।



डाउनी मिल्ड्यू रोग पहली बार 1878 में देखा गया एवं 1882 तक यह पूरे फ्रांस में फैल गया।

इस बीमारी के कारण फ्रांस के आधे से अधिक अंगूर के बाग नष्ट हो गए एवं 1915 तक इस रोग की वजह से फ्रांसीसी अंगूर के उत्पादन में 70% तक की कमी हो गयी थी।



कृषि उत्पाद निर्यात प्रोत्साहन पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम और कार्यशाला में भागीदारी

तमिलनाडु खाद्य प्रसंस्करण और कृषि निर्यात संवर्धन निगम (TNAPEX) द्वारा कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य निर्यात से जुड़े स्टार्ट-अप, किसानों, किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) एवं निर्यातकों के लिए एग्रो फूड ट्रेड सेंटर, मद्रुरै में दिनांक:01.03.2024 को आयोजित "कृषि उत्पाद निर्यात प्रोत्साहन पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम एवं कार्यशाला" में व.सं.केन्द्र पीक्यूएस, मद्रुरै ने सहभागिता की।

कृषि उत्पाद के निर्यात प्रोत्साहन सेमिनार में भागीदारी

तमिलनाडु सरकार के कृषि विपणन बोर्ड एवं कृषि विपणन और कृषि व्यवसाय विभाग द्वारा दिनांक:06.03.2024 को आयोजित "कृषि उपज के लिए निर्यात प्रोत्साहन सेमिनार" में व.सं.केन्द्र पीक्यूएस, मद्रुरै ने भाग लिया।



पेस्टिसाइड के सुरक्षित और विवेकपूर्ण उपयोग के प्रशिक्षण में भागीदारी

एचआईएल (इंडिया) लिमिटेड द्वारा आईसीएआर-केवीके, करूर के सहयोग से आयोजित "आईपीएम तकनीक अंगीकरण तथा पेस्टिसाइड के सुरक्षित और विवेकपूर्ण उपयोग पर किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम" में सीआईपीएमसी त्रिची दिनांक: 27.02.2024 को शामिल होने के साथ ही "आईपीएम तकनीक अंगीकरण एवं पेस्टिसाइड के सुरक्षित और विवेकपूर्ण उपयोग" विषय पर व्याख्यान दिया गया।



फल, सब्जी एवं अनाजों के निर्यात प्रक्रिया तथा पादप स्वच्छता आवश्यकताओं पर प्रशिक्षण सह जागरूकता कार्यक्रम में भागीदारी

दिनांक:11.03.2024 को अंबिल धर्मलिंगम कृषि कॉलेज और अनुसंधान संस्थान, तिरुचिरापल्ली में टीएनएपीईएक्स और एग्रीबिजनेस इनक्यूबेशन फोरम द्वारा आयोजित 'कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात संवर्धन कार्यशाला' में सीआईपीएमसी त्रिची ने भाग लेने के साथ ही "आईपीएम का महत्व तथा फल, सब्जी एवं अनाजों के निर्यात प्रक्रिया" विषय पर व्याख्यान दिया





संगरोध रोगजनक के कारण आयातित ग्रीष्मकालीन स्ववैश के बीजों को जला कर नष्ट करना

बुआई के लिए चीन से आयातित समर स्ववैश बीज की एक खेप से लिए गए सैंपल के परीक्षण के दौरान "जुचिनी पीला मोज़ेक वायरस" पाया गया। तदनुसार, आरपीक्यूएस, मुंबई से जारी आदेश के अनुसरण में डीपीपीक्यूएस एवं सीमा शुल्क विभाग के अधिकारियों की उपस्थिति में आयातित समर स्ववैश बीज के सम्पूर्ण मात्रा को 01.03.2024 को जला कर नष्ट किया गया।

द्विपक्षीय पादप स्वच्छता वार्ता

पादप स्वास्थ्य विषय पर भारत एवं यूरोपीय संघ के चौथी तकनीकी कार्य समूह बैठक द्विपक्षीय पादप स्वास्थ्य मुद्दों पर चर्चा के लिए श्री ए.के. श्रीवास्तव, सं.सचिव (पीपी), कृषि किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार की सह-अध्यक्षता में 12 फरवरी, 2024 को भारत एवं यूरोपीय संघ के चौथी तकनीकी कार्य समूह बैठक आयोजित की गई।



पादप स्वास्थ्य मुद्दों पर ऑस्ट्रेलिया-भारत की तकनीकी बैठक

श्री ए.के. श्रीवास्तव, सं.सचिव (पीपी), कृषि किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार एवं सुश्री एरिन पायने, सहायक सचिव, डीएफएफ, ऑस्ट्रेलिया की सह-अध्यक्षता में द्विपक्षीय पादप स्वास्थ्य मुद्दों पर दिनांक: 14.02.2024 को नई दिल्ली में बैठक आयोजित की गई।



बैठक में कृषि किसान कल्याण विभाग, निदेशालय, एपीडा एवं डी.ए एफ.एफ.,के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया तथा पादप स्वच्छता महत्व के विभिन्न तकनीकी मुद्दों पर चर्चा की गई।

गणमान्य अतिथियों का भ्रमण

पैक हाउस का अवलोकन

श्री राजेश अग्रवाल, अतिरिक्त सचिव, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार एवं एपीडा के अध्यक्ष श्री अभिषेक देव ने 28 फरवरी 2024 को ताजे फलों और सब्जियों के लिए पंजीकृत एमएसएमबी, वाशी, नवी मुंबई के एकोकृत पैक हाउस तथा उपचार सुविधा का अवलोकन किया। भ्रमण के दौरान ताजे फल और सब्जियों के निर्यात के लिए फाइटोसैनिटरी प्रमाणीकरण, निरीक्षण एवं पैक हाउस सुविधाओं से संबंधित पादप संगरोध गतिविधियों के बारे में जानकारी दी गई।



आरसीआईपीएमसी, कोलकाता का दौरा

डॉ. एस.एन. सुशील, निदेशक, आईसीएआर-राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, बेंगलुरु ने 27 फरवरी 2024 को आरसीआईपीएमसी कोलकाता के प्रयोगशाला तथा संग्रहालय का अवलोकन किया।

आरसीआईपीएमसी, लखनऊ का दौरा

डॉ. एस.एन. सुशील, निदेशक, आईसीएआर-एनबीएआईआर, बेंगलुरु ने 01.02.2024 को आरसीआईपीएमसी, लखनऊ के जैव-नियंत्रण प्रयोगशालाओं का अवलोकन किया।



आरसीआईपीएमसी, लखनऊ का दौरा

डॉ. टी. दामोदरन, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएसएच लखनऊ ने 12.01.2024 को आरसीआईपीएमसी, लखनऊ के जैव-नियंत्रण प्रयोगशालाओं का दौरा किया।



सीज़न लॉन्ग ट्रेनिंग प्रोग्राम (एस.एल.टी.पी.)



आरसीआईपीएमसी, लखनऊ द्वारा आम की फसल पर आयोजित सीज़न लॉन्ग ट्रेनिंग प्रोग्राम (एसएलटीपी) का उद्घाटन डॉ. जे.पी. सिंह, पीपीए द्वारा दिनांक: 03.01.2024 को किया गया तथा आम के लिए आईपीएम पर लंबे प्रशिक्षण कार्यक्रम के महत्व पर प्रशिक्षुओं को संबोधित किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन दिनांक: 01.02.2024 को हुआ। कार्यक्रम में 40 प्रतिभागियों (राज्य कृषि विभाग के अधिकारी और अन्य विस्तार कार्यकर्ता) ने भाग लिया तथा सभी प्रतिभागियों को आईपीएम मास्टर ट्रेनर के रूप में प्रशिक्षित किया गया।

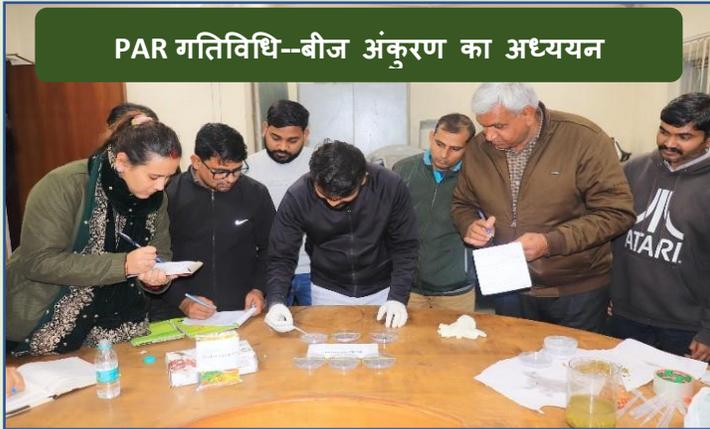


प्रशिक्षुओं द्वारा AESA चार्ट तैयार करना



ग्रूप डायनामिक्स

बीसीए के बड़े पैमाने पर गुणन पर व्यावहारिक सत्र



PAR गतिविधि--बीज अंकुरण का अध्ययन



मेंगो पैकहाउस और वीएचटी सुविधा का दौरा



आरसीआईपीएमसी, लखनऊ द्वारा आम की फसल पर आयोजित एसएलटीपी का सफलतापूर्वक समापन दिनांक:01.02.2024 को हुआ। इस अवसर पर डॉ. एस.एन. सुशील, निदेशक, आईसीएआर-एनबीएआईआर, बेंगलुरु, ने प्रशिक्षुओं को संबोधित किया तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम के सफल समापन पर अपनी संतुष्टि व्यक्त की।

प्रशिक्षण

एवं

कार्यशालाएं

आईपीएम पर पांच दिवसीय एवं दो दिवसीय मानव संसाधन विकास कार्यक्रम



आरसीआईपीएमसी, कोलकाता में 19 से 23 फरवरी, 2024 तक पश्चिम बंगाल के राज्य कृषि विभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए आईपीएम पर पांच दिवसीय मानव संसाधन विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें विभिन्न जिलों से कुल 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया। तकनीकी सत्र मुख्यतः हानिकारक रासायनिक पेस्टिसाइड के प्रयोग को कम करने पर केंद्रित थे।

15 से 19 मार्च, 2024 तक सीआईपीएमसी, मुरैना में पांच दिवसीय मानव संसाधन विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें कुल 41 एईओ ने भाग लिया। यह कार्यक्रम मध्य प्रदेश राज्य कृषि विभाग के ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारियों/वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारियों के लिए मध्य प्रदेश में उगाए जाने वाले अनाज और दालों के नाशीजीव (पेस्ट) के प्रबंधन के लिए नवीनतम आईपीएम तकनीक से अवगत कराने के लिए डिज़ाइन किया गया था।



जम्मू-कश्मीर में सेब के बागानों में खरीफ 2023-24 के दौरान सेब की "पत्ती ब्लॉच माइनर कीट" की उपस्थिति देखी गई तथा एनबीएआईआर द्वारा भी चेतावनी जारी की गई थी। सुचना मिलते ही, आईपीएम डिवीजन ने ऐप्पल लीफ ब्लॉच माइनर से हुए नुकसान का पता लगाने के लिए एक केंद्रीय टीम का गठन किया है एवं एडवाइजरी जारी की गई। जम्मू एवं कश्मीर में ऐप्पल लीफ ब्लॉच माइनर (एएलबीएम) के प्रबंधन के लिए आईपीएम तकनीक को बढ़ावा देने के लिए, सीआईपीएमसी

जम्मू एवं श्रीनगर ने 23-24 फरवरी 2024 और 8-9 मार्च 2024 को राज्य बागवानी विभाग तथा शे.क.कृ. एवं तक. विश्वविद्यालय के सहयोग से सेब उत्पादकों के लिए 2 दिनों का दो एचआरडी कार्यक्रम आयोजित किया। इसका उद्देश्य किसानों के बीच एएलबीएम द्वारा उत्पन्न चुनौतियों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और उन्हें सेब की खेती पर इसके प्रभाव को कम करने तथा पेस्ट के नियंत्रण हेतु रणनीति बनाने में सहयोग करना था।

ताजे फलों एवं सब्जियों के पेस्ट निरीक्षण तथा पहचान पर व्यावहारिक प्रशिक्षण



क्षेत्रीय वनस्पति संगरोध स्टेशन, मुंबई द्वारा 06-07 जनवरी, 2024 की अवधि के दौरान ताजे फलों एवं सब्जियों के पेस्ट निरीक्षण तथा पहचान पर व्यावहारिक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में आरपीक्यूएस, मुंबई तथा महाराष्ट्र राज्य सरकार से नामित पीएससी जारी करने वाले प्राधिकारियों एवं पंजीकृत पैक हाउसों के पर्यवेक्षकों समेत कुल 83 प्रतिभागियों ने भाग लिया। संयुक्त राज्य अमेरिका को निर्यात किये जाने वाले अनार के फलों के साफ़-सफ़ाई, यु.एस.ए. के लिए महत्पूर्ण संगरोधी पेस्ट के पहचान एवं अनार फलों के निरीक्षण पर विशेष रूप से चर्चा की गई।

परम्परागत कृषि विकास योजना (पीकेवीवाई) के तहत पश्चिम बंगाल के किसानों को आईपीएम प्रशिक्षण

पश्चिम बंगाल के राज्य कृषि विभाग की "परम्परागत कृषि विकास योजना (पीकेवीवाई)" के तहत 160 किसानों को आईपीएम प्रौद्योगिकियों के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराने के उद्देश्य से 5 जनवरी 2024 को आरसीआईपीएमसी, कोलकाता में आईपीएम तकनीक पर प्रशिक्षण दिया गया।



सिस्टर निवेदिता यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंसेज के छात्रों का प्रशिक्षण कार्यक्रम सह एक्सपोजर विजिट

'बायो एजेंट की उत्पादन तकनीक' विषय पर 5 से 16 फरवरी 2024 तक आरसीआईपीएमसी, कोलकाता में सिस्टर निवेदिता विश्वविद्यालय, कोलकाता के स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंसेज के 17 छात्रों (8वें सेमेस्टर बीएससी (एच) कृषि के छात्र) के लिए दस दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सह एक्सपोजर विजिट आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम हैंड्स ऑन लर्निंग/ बायो-पेस्टिसाइड उत्पादन तकनीक' पर केंद्रित था।



महिला किसानों के सशक्तिकरण हेतु प्रशिक्षण

सीआईपीएमसी रायपुर ने जीविका एनजीओ के सहयोग से 27.01.2024 को ग्राम अछोली जिला दुर्ग में लघु-स्तरीय महिला भूमिधारक किसानों के लाभ को अधिकतम करने के उद्देश्य से बागवानी फसलों में एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन पर एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 100 महिला किसानों ने भाग लिया।



पेस्टिसाइड डीलर एवं किसानों को प्रशिक्षण



प्रशिक्षण संगठन - यूनिवर्सल एगो बायोटेक, कलमेश्वर जिला के द्वारा नामित 40, पेस्टिसाइड डीलरों एवं किसानों को आईपीएम की अवधारणाओं तथा प्रयोगशाला एवं फार्म स्तर पर जैव नियंत्रण एजेंटों का बड़े पैमाने पर गुणन का प्रशिक्षण आरसीआईपीएमसी, नागपुर में 01.03.2024 को दिया गया। साथ ही पेस्टिसाइड डीलरों और किसानों को कृषि-पारिस्थितिकी तंत्र में प्राकृतिक शत्रुओं के संरक्षण की आवश्यकता, लेबल-सूचना, पेस्टिसाइड के सुरक्षित और विवेकपूर्ण उपयोग के बारे में जागरूक किया गया।

इलायची के बागान में पेस्ट प्रबंधन के लिए जैव नियंत्रण एजेंटों का प्रयोग-प्रदर्शन

सीआईपीएमसी, एर्नाकुलम ने 12.03.24 पर विंडरमेयर तथा मुन्नार के इलायची बागानों का भ्रमण कर किसानों को ट्राइकोकार्ड के प्रयोग का लाइव प्रदर्शन दिया तथा परभक्षी ट्राइकोग्रामा चिलोनिस, चेलोनस ब्लैकबर्नि, क्रिप्टोलेमस मॉन्ट्रेसुअरी, मार्जिनटस आदि को खेतों में मुक्त करने का प्रदर्शन दिया।



सब्जी और बागवानी फार्मस के लिए आईपीएम पर उन्मुखीकरण

सीआईपीएमसी एर्नाकुलम ने 20.02.2024 को सृष्टि ट्रस्ट के "सब्जी और बागवानी फार्म वाटिका" नुल्लाथन्नी, इडुक्की जिला का भ्रमण कर फार्म के फील्ड स्टाफ को सर्दी के मौसम के फलों और सब्जियों के लिए उपयोगी आईपीएम तकनीक से अवगत कराया।

निदेशालय में 08 मार्च 2024 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान अधिकारियों/कर्मचारियों ने लैंगिक समानता की शपथ ली तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया। महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक सशक्तिकरण में प्रत्यक्ष परिवर्तन लाने के साथ-साथ लिंग आधारित हिंसा एवं भेदभाव को समाप्त करने के लिए समाज में जागरूकता तथा उपलब्धि पर विचार-विमर्श किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस



आम के निर्यात के लिए पादप स्वच्छता पहलुओं पर ऑनलाइन कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम

आमफलों के निर्यात के लिए अच्छी कृषि पद्धतियों के कार्यान्वयन, निरीक्षण तथा उपचार सहित पादपस्वच्छता से जुड़े मुद्दों पर ऑनलाइन कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम 15.03.2024 को आयोजित किया गया जिसमें 500 से ज्यादा लोगों ने भाग लिया। इस ऑनलाइन कार्यक्रम में आरपीक्यूएस, पीक्यूएस, आरसीआईपीएमसी, सीआईपीएमसी, पीएसएसए, पीएसएसपी, एपीडा एवं राज्य कृषि और बागवानी विभाग एवं डीपीपीक्यूएस - मुख्यालय से प्रतिभागी उपस्थित थे।



इतिहास के पन्नों से

समय के साथ टिड्डी नियंत्रण चेतावनी संगठन

टिड्डियों के आक्रमण से उत्पन्न चुनौतियों से निपटने के लिए टिड्डी नियंत्रण ब्यूरो की स्थापना की गई थी।

1926-1931 के दौरान रेगिस्तानी टिड्डी से व्यापक तबाही एवं नुकसान को देखकर इंपीरियल भारत की ब्रिटिश सरकार ने 1939 में टिड्डी चेतावनी संगठन की स्थापना की एवं इसका मुख्यालय कराची (अविभाजित भारत) में बनाया गया।



जारी.....

1930

1939

1946

2019-20

1946 में, इसे कृषि मंत्रालय के वनस्पति संरक्षण संगरोध एवं संग्रह निदेशालय (पीपीक्यूएस) में मिला दिया गया था। इसका फील्ड मुख्यालय, जोधपुर, राजस्थान में तथा विभिन्न स्थानों पर 10 सर्कल कार्यालय कार्यरत है।

भारत 2019-20 के दौरान टिड्डी आक्रमण को नियंत्रित करने के लिए कीटनाशकों के छिड़काव के लिए ड्रोन और हेलीकॉप्टर तैनात करने वाला पहला देश बन गया।



रेगिस्तानी टिड्डी पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला

एफएओ द्वारा वित्त पोषित दो दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला दिनांक 11-12 मार्च, 2024 को एलडब्ल्यूओ, जोधपुर में आयोजित की गई थी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में निदेशालय और राज्य कृषि विभाग (राजस्थान और गुजरात) के 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया।



सत्यमेव जयते

भारत के राजपत्र --- महत्वपूर्ण अधिसूचनाएं

एस. ओ. 94(ई) दिनांक 8 जनवरी, 2024 द्वारा पादप संगरोध (भारत में आयात का विनियमन) आदेश, 2003 की अनुसूची II में आईसीडी बल्ली (दक्षिण गोवा) और आईसीडी दिघी (पुणे) को जोड़ा जाएगा।

जी.एस.आर. 34(ई) दिनांक 8 जनवरी, 2024, मसौदा नियम: कीटनाशक नियम, 1971 में, नियम 10 में, उप-नियम (1ए) में, पहले प्रावधान में, अंक, अक्षर और शब्द "31 दिसंबर, 2023" के लिए। अंक, अक्षर और शब्द "30 जून, 2024" से प्रतिस्थापित किए जाएंगे।

जी.एस.आर. 37(ई) 11 जनवरी, 2024, कीटनाशक नियम, 1971 में, नियम 19 में, उपनियम (3) में, "स्पष्टीकरण" में, खंड (i) में, शब्द "छह" के लिए, शब्द "नौ" प्रतिस्थापित किया जाएगा।

एस. ओ. 400(ई) 30 जनवरी, 2024 अनुसूची VI में "पर्सिया अमेरिकाना (एवोकैडो), उपभोग के लिए ताजे फल, ब्राजील को शामिल किया जाएगा।

कीटनाशक अधिनियम, 1968 (1968 का 46) की धारा 3 के खंड (ई) के उप-खंड (ii) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केंद्र सरकार, केंद्रीय कीटनाशक बोर्ड के परामर्श के बाद, निम्नलिखित पदार्थों को उक्त अधिनियम की अनुसूची में, शामिल किया।

एस. ओ. 1148(ई) 6 मार्च, 2024 अनुसूची में निम्नलिखित प्रविष्टियाँ सम्मिलित की जाएंगी, अर्थात्: "टियाफेनसिल, 3-डेसेन-2-वन, डाइक्लोबेंटियाज़ॉक्स, फेनहेक्सामिड, पेलागॉनिक एसिड, बाइसाइक्लोपाइरोन, आइसोटियानिल, पाइरासल्फोटोले, फोरमसल्फ्यूरॉन, डाइक्लोरोमेज़ोटियाज़, पिकोलिनफेन।"

एस. ओ. 1482(ई) दिनांक 6 मार्च, 2024—विनाशकारी कीट और कीट अधिनियम, 1914 (1914 का 2) की धारा 4ए द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केंद्र सरकार ने विशेष शर्तों के साथ आलू के बीज कंदों की आवाजाही की अनुमति दी* उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और जम्मू और कश्मीर के जिलों से लेकर भारत के अन्य सभी राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों तक।

जी.एस.आर. 226(ई) 21 मार्च, 2024 कीटनाशक नियम, 1971 में, नियम 10 में, उप-नियम (3 ए), खंड (i) में, निम्नलिखित प्रावधान डाला जाएगा, यथा: - "बशर्ते कि एक व्यक्ति जो आवेदन करता है ग्लाइफोसेट और उसके डेरिवेटिव के उपयोग के साथ कीट नियंत्रण संचालन करने के लिए लाइसेंस प्रदान करना, यदि लाइसेंसिंग अधिकारी ने जमा करने की तारीख से तीस दिनों की अवधि की समाप्ति के बाद उसे लाइसेंस प्रदान नहीं किया है, तो उसे लाइसेंस प्रदान किया गया माना जाएगा। ग्लाइफोसेट और इसके डेरिवेटिव का उपयोग करने वाले संचालन के सभी स्थानों के लिए एक हजार रुपये के शुल्क के साथ उनका आवेदन होना चाहिए।

जी.एस.आर. 228(ई) दिनांक 20 मार्च 2024, कीटनाशक नियम, 1971 के नियम 10 में, उपनियम (1ए) में, प्रथम प्रावधान में, अंकों, अक्षरों और शब्द "31 दिसंबर, 2023" के स्थान पर अंक, अक्षर और शब्द "30 जून, 2024" प्रतिस्थापित किया जाएगा।

सफलता की गाथा

पंजाब में पीला रतुआ का सफल प्रबंधन

सीआईपीएमसी जालंधर ने पंजाब के रूपनगर जिले में पीले रतुआ की पहली उपस्थिति देखी और तुरंत राज्य के कृषि अधिकारियों को सतर्क कर दिया एवं विशेष रूप से किसानों को शुरुआती पहचान, उचित फसल प्रबंधन तकनीक और कवकनाशी के समय पर उपयोग के लाभ से अवगत कराया गया। किसानों को यह भी बताया गया कि पीला रतुआ रोग गेहूं में व्यापक क्षति कर सकता है, यदि गेहूं की बीमारी पर ध्यान न दिया जाए और समय रहते इसका प्रबंधन न किया जाए। व्यापक जागरूकता एवं तत्काल प्रबंधन के वजह से ही इस रोग का पंजाब के अन्य क्षेत्रों में प्रसार रोका जा सका।



भारत में सफलतापूर्वक व्हीट ब्लास्ट का उन्मूलन!!!



रोग कारक:

मैग्नापोर्ये ओराइजी पैथोटाइप ट्रिटिकम

प्रसार एवं पहली रिपोर्ट

पहली बार इस रोग के प्रसार की आधिकारिक सूचना 1985 में ब्राज़ील से आई, यह दक्षिण अमेरिकी गेहूं के खेतों में व्यापक रूप से प्रसारित है, 1990 के दशक की शुरुआत में 30 लाख हेक्टेयर के क्षेत्र को प्रभावित किया। इस रोग का विस्तार बीज, फसल अवशेष और हवा के जरिये लंबी दूरी तक हो सकता है।

वर्ष 2016 में अंतरमहाद्वीपीय प्रसार

2016 में यह रोग बांग्लादेश तक फैल गया एवं तीव्र विस्तार के कारण बांग्लादेश के आठ जिलों में लगभग 15,000 हेक्टेयर भूमि को प्रभावित किया है, फलस्वरूप प्रभावित क्षेत्रों में उपज में औसतन 51% की कमी आई। दो साल बाद, 2018 पहली बार अफ्रीका महाद्वीप के राष्ट्र जाम्बिया में गेहूं की फसलों में इस रोग की सूचना मिली।



© CIMMYT



भारत का साहसिक कदम

2017 - भारतीय गेहूं उत्पादन के लिए चुनौती

फरवरी 2017 के दौरान, बांग्लादेश की सीमा से लगे मुर्शिदाबाद के जलांगी ब्लॉक और उसके बाद नदिया जिले के ब्लॉकों के खेतों में व्हीट ब्लास्ट के शुरुआती लक्षण देखे गए थे।

एनपीपीओ, भारत (व.सं.सं.एवं संग्रह निदेशालय,) ने पश्चिम बंगाल के राज्य कृषि विभाग के साथ मिलकर इस खतरे को देश के बाकी हिस्सों में फैलने से रोकने के लिए तकरीबन 1000 हेक्टेयर में गेहूं की खड़ी फसल को जलाने का साहसिक कदम उठाया।

देश में गेहूं ब्लास्ट के प्रवेश होने से भारत के गेहूं उत्पादन एवं निर्यात संभावना को काफी नुकसान संभावित है

राष्ट्रीय कीट निगरानी प्रणाली (एनपीएसएस) पर प्रगतिशील किसानों को प्रशिक्षण

राष्ट्रीय कीट निगरानी प्रणाली (एनपीएसएस), वनस्पति संरक्षण, संगरोध और संग्रह निदेशालय एवं आईसीएआर-एनसीआईपीएम, नई दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप से विकसित की गई है, जो की आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), सूचना एवं संचार तकनीक जैसी आधुनिक प्रौद्योगिकियों का एकीकृत अनुप्रयोग कर, व्यापक क्षेत्र में पेस्ट(नाशीजीव) निगरानी की प्रक्रिया को स्वचालित एवं तेज बना सकता है। एनपीएसएस का उद्देश्य है की नवीनतम डिजिटल प्रौद्योगिकियों एवं स्मार्टफोन के उपयोग द्वारा किसी क्षेत्र विशेष में बढ़ रहे पेस्ट प्रकोप की सूचना, पेस्ट की पहचान में सहायता तथा आवश्यकता अनुरूप किसानों को तत्काल सलाह मिल सके।



सीआईपीएमसी, शिलांग



सीआईपीएमसी, नासिक



सीआईपीएमसी, ईटानगर



सीआईपीएमसी, गंगटोक

देश भर में स्थित सीआईपीएमसी कार्यालयों ने भारत में एआई आधारित पेस्ट निगरानी प्रणाली "एनपीएसएस" के सुलभ अंगीकरण तथा किसानों को इस तकनीक से परिचित कराने के उद्देश्य से विभिन्न राज्यों के 276 जिलों के 2760 किसानों को प्रशिक्षित किया है। शीघ्र ही बाकी बचे 480 जिलों के किसानों को 2024-25 के दौरान प्रशिक्षित किया जाएगा।



सीआईपीएमसी, हैदराबाद



आरसीआईपीएमसी, लखनऊ

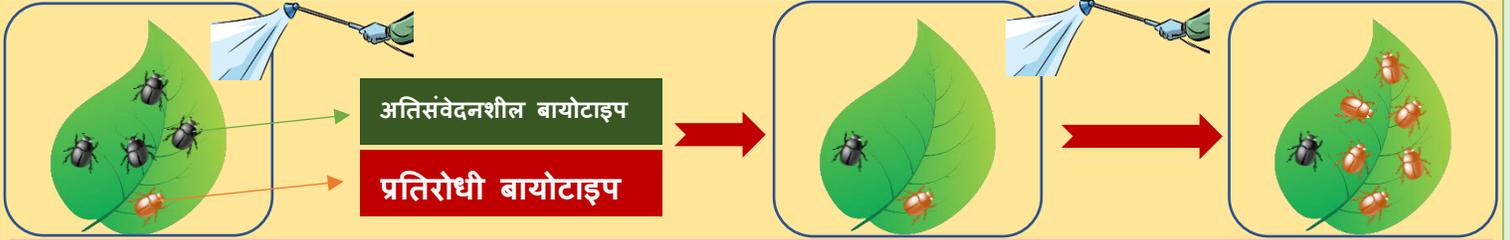


आरसीआईपीएमसी, बेंगलुरु

प्रतिरोध, पुनरुत्थान और प्रतिस्थापन

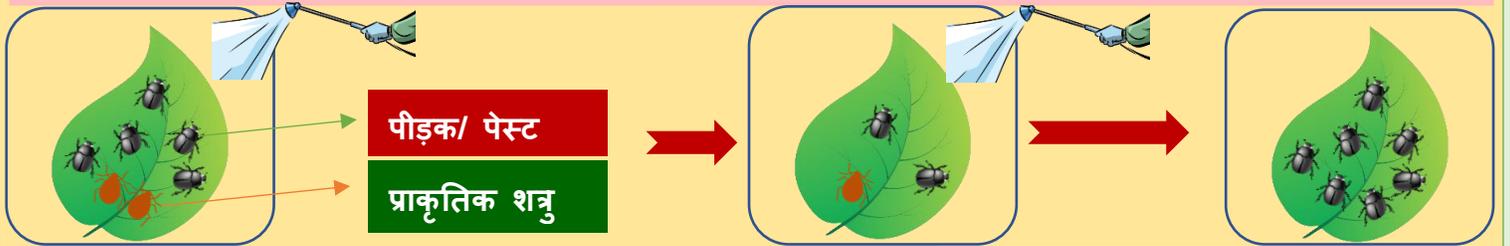
पेस्टिसाइड प्रतिरोध

यह किसी पेस्टिसाइड के प्रति पेस्ट (नाशीजीव) आबादी की कम हुई संवेदनशीलता है, जो पहले पेस्ट विशेष को नियंत्रित करने में प्रभावी थी। एक ही प्रकार के पेस्ट की आबादी उस जीव के बायोटाइप से बनती है एवं जब एक ही पेस्टिसाइड का बार-बार उपयोग किया जाता है, तो पेस्ट विशेष के कई बायोटाइप जो उस पेस्टिसाइड के प्रति प्रतिरोधी बन जाते हैं और अपने अर्जित वंशानुगत परिवर्तन/लक्षण (प्रतिरोध) को संतानों के माध्यम से आगे बढ़ाते हैं। अंततः, पेस्टिसाइड के प्रति प्रतिरोधी पेस्ट की आबादी बढ़ती है और पेस्टिसाइड की प्रभावकारिता कम हो जाती है।



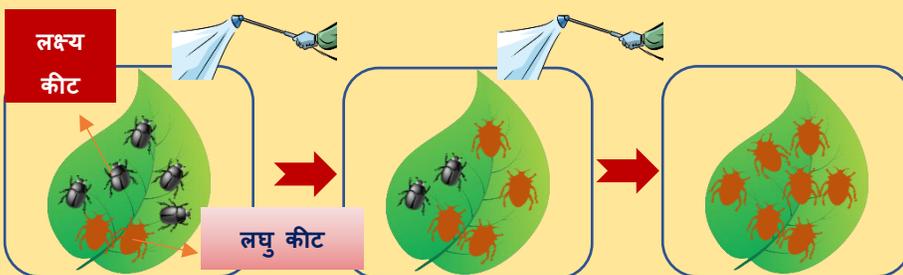
पेस्ट पुनरुत्थान

जब एक ब्रॉड स्पेक्ट्रम पेस्टिसाइड का बार-बार उपयोग किया जाता है तो हानिकारक पेस्ट की आबादी में प्रायः वृद्धि दिखाई देती है। क्योंकि, पेस्टिसाइड के बार-बार प्रयोग से प्राकृतिक शत्रुओं की आबादी खत्म हो जाती है, जो सामान्यतया पेस्ट की आबादी को नियंत्रित रखते हैं। अंततः, पेस्ट की आबादी तेजी से बढ़ती है जिससे अधिक नुकसान होता है।



पेस्ट प्रतिस्थापन

पेस्ट प्रतिस्थापन तब होता है जब पेस्टिसाइड उपचार, लक्षित कीट को मार देता है, लेकिन इस वजह से एक नई पेस्ट-प्रजाति को पनपने का मौका मिल जाता है, सामान्यतया जो पहले एक कम हानिकारक पेस्ट था। इसके परिणामस्वरूप एक छोटा पेस्ट एक बड़ी समस्या बन जाता है और मूल लक्ष्य पेस्ट की तुलना में फसल को अधिक नुकसान कर सकता है।



संदर्भित 3 'प' को कैसे प्रबंधित करें

- मानव- पोषित एवं प्राकृतिक पेस्टनियंत्रण एजेंटों का एकीकरण,
- चयनात्मक और उच्च क्षमता वाले रसायनों का उपयोग,
- अनुमोदित पेस्टिसाइड सलाह अनुसार ही प्रयोग करें,
- प्राकृतिक शत्रु विनाश से बचने के लिए निश्चित अन्तराल पर उपचार करें,
- बायो-लैब में पोषित प्राकृतिक पेस्टनियंत्रण एजेंटों का समय- समय पर खेतों तक पहुंचाना,
- पेस्टिसाइड के उपयोग की संख्या को कम करें,
- व्यापक क्षेत्रों का एकसाथ उपचार से बचें,

प्रकाशित:

वनस्पति संरक्षण सलाहकार

वनस्पति संरक्षण संगरोध एवं संग्रह निदेशालय,
सीजीओ कॉम्प्लेक्स, एनएच-IV, फरीदाबाद, हरियाणा -
121001
दूरभाष: 0129-2413985, ईमेल:-ppa@nic.in

डिज़ाइन एवं संकलनकर्ता:

श्री ज्ञानेश्वर बंधोर, उप निदेशक (की.वि.), श्री बी बी कुमार, सहा. नि. (ख.वि.), श्री विशाल एल गटे, व.सं.अधि. (व.रो.वि.), डॉ. संतोष पी. पटोले, व.सं.अधि. (व.रो.वि.) सुश्री भावना आर. सिंह, सहा.व.सं.अधि. (की.वि.), और श्री रोहित एम., सहा.व.सं.अधि. (व.रो.वि.)